(क्षितिज)
कक्षा - X
विषय - हिन्दी

03.07.20

8. पाठ - कन्यादान

- ऋतुराज

प्रश्नोत्तर :

प्र-1 उ- माँ ने ऐसा इसलिए कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना क्योंकि माँ जानती है कि यह समाज अत्यंत निर्मम है। यहाँ भोली - भाली लड़कियों का शोषण किया जाता है। लड़कियाँ स्वभाव से कोमल सरल तथा भोली-भाली होती हैं। समाज उनकी सरलता और भोलेपन का नाज़ायज़ फ़ायदा उठाकर उन्हें उत्पीड़ित कर सकता है। वह लड़कियों को जागरूक करने तथा समाज में प्रचलित मान्यता को तोड़ने के प्रयास में भी ऐसा कह सकती है।
उसका मानना है कि परिवार के सभी सदस्यों का मान-सम्मान तथा आदर-सत्कार करना ही स्त्रियों का परम कर्तव्य होना चाहिए। लेकिन अगर उसके अधिकारों को दबाया जाए तो उसका प्रतिकार अवश्य करना चाहिए।

प्र-2. उ-

क) इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की दयनीय दशा जैसी स्थिति की ओर संकेत किया गया है। यह समाज अत्यंत निर्मम है। प्रायः विवाहित स्त्रियों के द्वारा दहेज न ले जाने पर उनके ससुराल पक्ष के लोग उन्हें शारीरिक और मानसिक दंड देते हैं। स्वार्थ और लोभ की पूर्ति हेतु वह अमानवीय और जघन्य अपराध करने से भी नहीं चूकते। स्त्रियों के सरल स्वभाव का फायदा उठाकर वे उन्हें जलाने जैसा घिनौना अपराध भी करते हैं। कभी - कभी

रोटियाँ पकाते-पकाते ज्ञान के अभाव में उसी आग से आत्मदाह भी कर लेती हैं।

ख) माँ ने बेटी को सचेत करना इसलिए जरूरी समझा क्योंकि सभी लड़कियाँ शादी के समय खुशहाली के सपने देखती हैं परंतु वे सभी सपने झूठे सिद्ध होते हैं। वास्तव में बहुओं को प्यार के नाम पर घर-गृहस्थी के कठोर बंधनों में बाँधा जाता है। यदि वे इससे इनकार करें तो उन्हें जला भी दिया जाता है। परंतु विवाह के समय भोली कन्याओं को इस दुर्दशा का एहसास नहीं होता इसलिए वे उससे बचने का कोई उपाय भी नहीं करतीं।

प्र०-3 उपर्युक्त काव्य पंक्तियों को पढ़कर हमारे मन में लड़की की जो छवि उभरती है वह कुछ इस प्रकार है -

क) लड़की अभी सयानी नहीं है।
ख) लड़की को दुनिया के उजले पक्ष की जानकारी तो है पर दूसरे पक्ष छल-कपट, शोषण आदि की जानकारी नहीं है।
ग) लड़की विवाह की सुखद कल्पना में खोई है।
घ) उसे केवल सुखों का अहसास है, दुखों का नहीं।
ङ) उसे ससुराल की प्रतिकूल परिस्थितियों का ज्ञान नहीं है।

प्र०-4. प्राय: यह देखा जाता है कि बेटी ही घर के कामों में अपनी माँ का हाथ बँटाती है। उसके हर सुख-दुख का ख्याल रखती है। जिस प्रकार घर में संचित की गई पूँजी के खाली हो जाने पर व्यक्ति के जीवन में खालीपन-सा आ

जाता है। ठीक उसी प्रकार बेटी भी पूँजी की भाँति ही घर से विदा हो जाती है और माँ की जिंदगी तथा घर के अन्य सदस्यों के जीवन में रिक्तता आ जाती है इसलिए माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' के समान लग रही थी।

उ०- 5 माँ ने अपनी बेटी को सीख देते हुए कहा कि यह समाज अत्यंत निर्मम है। यहाँ भोली-भाली लड़कियों का शोषण किया जाता है, इसलिए तू स्वभाव से कोमल, सरल तथा भोली - भाली रहते हुए भी अपने आप को ससुराल वालों के शोषण से बचाने के लिए अपने भोलेपन को उजागर मत होने देना। यदि ऐसा नहीं करोगी तो तेरी सरलता और भोलेपन का नाज़ायज फायदा उठाया जाएगा तथा तुझे उत्पीड़ित किया जाएगा, इसलिए माँ ने अपनी बेटी से कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना। वस्त्रों तथा आभूषणों को बंधन न बनने देना। आग रोटियाँ सेंकने के लिए है, जलने के लिए नहीं। अपने रूप की प्रशंसा सुनकर कभी गर्वित मत होना। अपना स्वभाव लड़कियों की तरह जरूर बनाए रखना। परंतु सतर्क रहना और जरूरत पड़ने पर विरोध अवश्य करना।

Scanned with CamScanner

रचना और अभिव्यक्ति

उ० 6. मेरी दृष्टि में कन्या के साथ दान की बात करना उचित नहीं है। दान तो किसी वस्तु का किया जाता है। कन्या कोई वस्तु तो है नहीं। उसका अपना एक अलग व्यक्तित्व, रुचि पसंद-नापसंद, इच्छा-अनिच्छा आदि है। वह किसी वस्तु की भाँति निर्जीव नहीं है। दान देने के बाद दानदाता का वस्तु से कोई संबंध नहीं रह जाता है, परंतु कन्या का संबंध आजीवन माता-पिता से बना रहता है। कन्या एक वस्तु कभी भी नहीं हो सकती है, इसलिए कन्या को दान देने जैसी बात करना पूर्णतया अनुचित है।

अतिरिक्त प्रश्न :

क) 'कन्यादान' कविता में नारी सुलभ किन कमज़ोरियों की ओर संकेत किया गया है?

उ० 'कन्यादान' कविता में कवयित्री ने नारी सुलभ जिन कमज़ोरियों की ओर संकेत किया है वे हैं—

क) नारी दूसरों की प्रशंसा सुनकर अपने ही रूप सौंदर्य पर मुग्ध हो जाती है।

ख) उसे सुंदर वस्त्र और आभूषणों से विशेष लगाव होता है, जो अंततः उसके लिए बंधन सिद्ध होते हैं।

Scanned with CamScanner